जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

अजमेर

Rashtradoot

फोनः- 2627612, 2427249 फैक्सः- 0145-2624665 वर्षः 26 संख्याः 229 प्रभात अजमेर, मंगलवार 22 मार्च, 2022 आर.जे./ए.जे./73/2015-2017 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

रिओ डी जनैरो महानगर से कुछ ही दूर पर एक "रेन फॉरेस्ट रिज़र्व" है, जो विश्व की सर्वाधिक संकटग्रस्त प्राइमेट्स प्रजातियों में से एक, गोल्डन लायन टैमरिन का एक मात्र आवास है। यह प्रजाति सिर्फ स्टेट ऑफ रिओ में पाई जाती है। अर्थात् यहाँ के प्राकृतिक आवासों में ही इन वानरों को देखा जा सकता है। एटलांटिक फॉरेस्ट में रहने वाले ये जीव छोटे-छोटे पारिवारिक समूहों में रहते हैं, जिसमें जीवन भर एक ही साथी के साथ रहने वाला वयस्क जोड़ा व उनके बच्चे ही होते हैं। हालांकि इन्हें फल व कीड़े खाना पसंद है पर ये सांप व मेंढक का शिकार करने में माहिर होते हैं और कई बार तो छोटे पक्षियों का भी शिकार कर लेते हैं। पंद्रहवीं सदी के पुर्तगाली उपनिवेशों में भी इस वानर का जिक्र मिलता है। सन् 1500 में ब्राज़ील में पुर्तगालियों के आने के बाद एटलांटिक रेन फॉरेस्ट का भारी विनाश आरंभ हो गया। फिर उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में बड़े पैमाने पर इन बंदरों का अवैध व्यापार किया गया। इसकी वजह से 60 के दशक में इनकी आबादी इतनी कम हो गई कि ये स्टेट ऑफ रियो से लुप्त ही हो गए, सिर्फ पोको डास एन्टस क्षेत्र के जंगलों में अवश्य इनका छोटा सा समूह बच गया था। इसके बाद संरक्षणविद् हरकत में आए और 1971 में पोको डास एन्टस को ब्राज़ील का फर्स्ट रिज़र्व घोषित किया गया, ताकि इन जानवरों का संरक्षण किया जा सके। कैप्टिव ब्रीडिंग से इनकी आबादी बढ़ाने के लिए पूरे यूरोप और अमेरिका के ज़ू में इनकी आबादी को सुरक्षित किया गया। अस्सी व नब्बे के दशक में, यू.के. व अमेरिका के जंतुआलयों से टैमरिन वानरों का ब्राज़ील के जंगलों में पुनर्वास किया गया। इसके लिए पहले तो उन्हें जंगल के जीवन का आदी बनाया गया फिर जंगल में छोड़ दिया गया। इससे रिज़र्व की आबादी की आनुवंशिक विविधता में भी वृद्धि हुई। कई इन्टैन्सिव कंज़र्वेशन कार्यक्रमों के बावजूद ये वानर खतरे से बाहर नहीं हैं। सन् 2010 में ब्राज़ील में मच्छर के माध्यम से फैलने वाला यलो फ़ीवर वायरस फैला, इसने वानरों को भी संक्रमित किया। इस बीमारी से गोल्डन लायन टैमरिन सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ। अनुमान है कि वायरस संक्रमण से इनकी आबादी 32 प्रतिशत घट गई। बाद में इस रोग की वैक्सीन बना ली गई और इन वानरों को वैक्सीन की खुराक दी गई, जिससे इनकी स्थिति में सुधार हुआ है।

शरद यादव की "बंगला राजनीति" कामयाब होगी?

ओ.बी.सी. राजनीति के एक बार सुपरस्टार रहे, शरद यादव ने तेजस्वी यादव की पार्टी आर.जे.डी. में अपने संगठन, लोकतांत्रिक जनता दल को विलय क्यों किया?

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 21 मार्च। पुराने समाजवादी नेता शरद यादव को रविवार को अपने संगठन का लालू प्रसाद के राष्ट्रीय जनता दल (आर.जे.डी.) में विलय का जो निर्णय लिया है, वह किसी के भी समझ में आ सकता है। देश की राजनीति में, विपक्ष की सिकुड़ती जा रही स्थिति के बीच, 74 वर्षीय यादव में अब वो पुराना दम-खम नहीं रहा है, जिसके लिए वे जाने जाते थे। इसके अलावा उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है। लुटियंस दिल्ली के उनके 7, तुगलक रोड बंगले को खाली करने की संभावनाएं अब वास्तविक रूप ले चुकी हैं क्योंकि उच्च न्यायालय ने पिछले मंगलवार को दिये गये अपने आदेश में उनसे कहा है कि वे 15 दिन के अंदर इस बंगले को खाली कर दें। ज्ञातव्य है कि शरद यादव इस बंगले में दशकों से रह रहे हैं। जनता दल (यूनाइटेड) से निष्कासित होने के बाद, 2017 में उन्होंने लोकतांत्रिक जनता दल पार्टी बनाई थी। उसके आर.जे.डी. में विलय करने से, उन्हें यह आशा है कि वे राज्यसभा में पहुंच सकते हैं, और इसके परिणामस्वरूप, या तो उन्हें तुगलक रोड का यही बंगला या अन्य कोई सरकारी बंगला आवंटित हो सकता है। सूत्रों का कहना है कि शरद यादव को ऐसी आशा भी है कि आर.जे.डी. उनके पुत्र शान्तनु बुंदेला के राजनैतिक में प्रवेश के लिये "लॉन्च पैड" उपलब्ध करा देगा।

- **उनका, लुटयन्स दिल्ली का, 7, तुगलक रोड स्थित बंगला अब खाली करने के लिये हाई कोर्ट का अंतिम नोटिस आ गया है, अतः शरद यादव, तेजस्वी से हाथ मिलाकर, राज्यसभा की सीट पाने को लालायित हैं, जिससे बंगले पर हक बना रहे।**
- **शरद यादव की बढ़ती उम्र (74 वर्ष) तथा बीमारियों से ग्रस्त शरीर के कारण संभवतया मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए, तेजस्वी उन्हें बिहार से अपने कोटे से राज्यसभा की सीट शायद दिलवा भी सकते हैं।**
- **पर, शुद्ध राजनीति से अगर तेजस्वी सोचते हैं, तो ओ.बी.सी. वोट बैंक के गैर यादव प्रत्याशी को राज्यसभा की सीट देना चाहेंगे। तेजस्वी, आर.जे.डी. को यादव-मुस्लिम के परम्परागत वोट बैंक से आगे नहीं ले जा पाये हैं, जो पिछले विधानसभा में उजागर हो गया था, अतः अगर उन्हें अपने वोट बैंक का विस्तार करना है, गैर यादव ओ.बी.सी. को सीट देनी पड़ेगी।**

लेकिन समझ में न आने वाली बात यह है कि, ओ.बी.सी.राजनीति के इस सुपर स्टार के आर.जे.डी. में शामिल होने के प्रतीकात्मक महत्व के अलावा, तेजस्वी यादव या आर.जे.डी. को इस विलय से आखिर क्या मिलेगा? जैसा कि 2020 के बिहार चुनावों तथा उत्तर प्रदेश के हाल ही के चुनावों ने यह दर्शा दिया है कि तेजस्वी और अखिलेश चुनावी लड़ाई में विजयी दांव नहीं खेल पाए, क्योंकि इनकी पार्टियां, यादव और मुस्लिमों के अपने परम्परागत वोटों के अलावा, अन्य जातियों में अपना जनाधार तैयार करने में असफल रहीं हैं। इसलिये, तेजस्वी इस पुराने नेता के दावे की अनदेखी कर सकते हैं तथा इनके बजाय, किसी पिछड़े नेता को राज्यसभा में पहुंचाया जा सकता है ताकि पार्टी के लिये एक नये वोट बैंक की संभावना बन सके। शान्तनु बुंदेला को कुछ जिम्मेदारियां तो दी जा सकती हैं कि ऐसी प्रबल संभावनाएं हैं कि उन्हें अभी अपनी बारी का इंतजार करना पड़ेगा।

अगले महीने, बिहार की पांच राज्यसभा सीटें खाली होंगी। इनमें अपना कार्यकाल पूरा करने वाली लालू प्रसाद की बेटी मीसा भारती के अलावा,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बेताल की कहानियों जैसे क्यों उभरती हैं पुतिन को मारने की साजिश की खबरें

खबरों का स्रोत है यूक्रेन की डिफैन्स इन्टैलीजैंस

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 21 मार्च। यूक्रेन के डिफैंस इन्टैलीजैंस ने एक नितांत भड़काऊ दावा करते हुए कहा है कि रूस का कुलीन वर्ग राष्ट्रपति पुतिन को हटाने की योजना बना रहा तथा उनके उत्तराधिकारी का नाम पहले से ही उसके दिमाग में है।

यूक्रेन के रक्षा मंत्रालय के चीफ डायरैक्टोरेट ऑफ इन्टैलीजैंस का यह भड़काऊ बयान मंत्रालय के ऑफीशियल फेसबुक पेज की एक पोस्ट के मार्फत आया है। यह पोस्ट बड़े ही निर्भीक अंदाज में इस तरह से शुरू होती है-"जहर देना अचानक कोई बीमारी या दुर्घटना रूस का कुलीन वर्ग पुतिन को हटाने की संभावना पर विचार कर रहा है।"

न्यूजवीक की एक रिपोर्ट के अनुसार पोस्ट में व्लादिमीर पुतिन के खिलाफ रूस के व्यवसायिक तथा राजनीतिक अभिजात्य वर्ग के रसूखदार व्यक्तियों का एक समूह गाठत हो गया है और उसका लक्ष्य पुतिन को जल्द से जल्द सत्ता से हटाना और यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों से टूट चुके आर्थिक संबंधों को पुन: बहाल करना है।

पोस्ट में दावा किया गया है कि रूस के अभिजात्य वर्ग का यह तथाकथित समूह ना कवल पुतिन का हत्या का संभावना पर विचार कर रहा है, बल्कि एलैक्ज़ैण्डर बोर्तनिकोव का नाम उनके एक संभावित उत्तराधिकारी के रूप में तय कर दिया गया है। बोर्तनिकोव वर्तमान में रूस की फैडरल सिक्योरिटी सर्विस (एफ.एस.एस.) के निदेशक हैं और यूक्रेन पर हाल ही किए गए हमले से पूर्व उन्होंने यूक्रेन की आबादी तथा सैन्य क्षमताओं का विश्लेषण तैयार किया था।

चीफ डायरैक्टोरेट का दावा है कि पुतिन और बोर्तनिकोव में हाल ही में अनबन हुई है क्योंकि पुतिन यूक्रेन पर कब्जा करने में आ रही कठिनाईयों का दोषारोपण अपने इस अधीनस्थ पर कर रहे हैं।

बताया जाता है कि बोर्तनिकोव अब पुतिन को हटाने के संभावित तरीके खोजने के लिए रूस के कुलीन वर्ग के इस समूह के साथ मिलकर कम कर रहे हैं। पोस्ट में दलील दी गई है कि "वे बोर्तनिकोव ही हैं जो हाल ही में रूस के तानाशाह के अप्रिय बने हैं। एफ.एस.एस. के इस अग्रणी व्यक्ति के पतन का अधिकारिक कारण यूक्रेन के खिलाफ जंग को लेकर किया गया एक घातक गलत आकलन है। बोर्तनिकोव और उनका विभाग ही यूक्रेन की जनता

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **इन खबरों के अनुसार, साजिश कर्ताओं ने पुतिन के उत्तराधिकारी का भी चयन कर लिया है।**
- **इस रिपोर्ट्स के अनुसार, उत्तराधिकारी हैं, एलैक्ज़ैण्डर बोर्तनिकोव।**
- **बोर्तनिकोव रूस की फैडरल सिक्युरिटी सर्विस के निदेशक हैं तथा हाल ही में पुतिन व बोर्तनिकोव में तनाव उत्पन्न हो गया है।**
- **बोर्तनिकोव ने जो प्लानिंग की थी, यूक्रेन के युद्ध की, वह असफल सी लग रही है, क्योंकि बोर्तनिकोव यह आकलन नहीं कर पाये थे कि, रूसी सेना को इतनी दिक्कतें आयेंगी आक्रमण में तथा आक्रमण इतनी धीमी गति से आगे बढ़ेगा।**

सुजानगढ़ तोरण का प्रकरण

जयपुर, 21 मार्च (का.सं.)। केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने सालासर बालाजी के प्रवेशद्वार को तोड़ने को लेकर कांग्रेस पर "फेक न्यूज" फैलाने का आरोप लगाया है। उधर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच ने भी सुजानगढ़ में राजदरबार सहित प्रवेश द्वारा गिराने को लेकर गहलोत सरकार की आलोचना की है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि "सुनो फेक न्यूज प्रोवाइडर्स कांग्रेसियों, सच को छिपाने के लिए चाहे जितनी फेक न्यूज फैला लो। जनता जानती है धर्म का सेवक कौन है और धत्कर्म का प्रचारक कौन?" शेखावत ने सोमवार को ट्वीट कर कहा कि कांग्रेस सनातन धर्म विरोध में धत्कर्म पर धत्कर्म किए जा रही है। उसे समस्या है कि भाजपा हिंदुओं के पक्ष में क्यों खड़ी होती है? क्यों 'जय श्रीराम' को राष्ट्रीय स्वर बना देती है।

- **गजेन्द्र सिंह ने कांग्रेस पर फेक न्यूज फैलाने का आरोप लगाया।**

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच ने कहा कि इस मामले में पीडब्ल्यूडी के तथ्यात्मक दस्तावेज यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सोमवार को केवल 26 ही नए करोना संक्रमित मिले

राज्य के 26 जिलों में कोई भी नया संक्रमित नहीं मिला है

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 21 मार्च। प्रदेश में करोना संक्रमण के नए मामलों में कमी आई है। सोमवार को रविवार के मुकाबले में 6 और रोगी कम मिलने के साथ ही 26 नए संक्रमित मिले हैं। इस बीच 79 और मरीजों के ठीक होने से राज्य में एक्टिव केस घटकर 359 रह गए हैं।

प्रदेश में सोमवार को केवल 7 जिलों में 26 नए करोना संक्रमित मिले हैं। इससे पहले रविवार को 32 रोगी पाए गए थे। इधर राजधानी जयपुर में भी मामूली गिरावट के बाद 15 नए संक्रमित मिले। इसके अलावा जोधपुर व उदयपुर में 3-3, अलवर में 2 तथा बांसवाड़ा, भरतपुर और प्रतापगढ़ में 1-1 नया संक्रमित सामने आया है। वहीं 26 जिलों अजमेर, बारां, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चूरू, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जालोर, झालावाड़, झुंझुनूं, करौली, कोटा, नागौर, पाली, राजसमंद, सवाई माधोपुर, सीकर, टोंक और सिरोही में एक भी नया संक्रमित नहीं मिला है। इस बीच राज्य में 79 संक्रमित ठीक हुए हैं। इसके साथ ही रिकवरी रेट बढ़कर 99.22 फीसदी हो गई है। वहीं एक्टिव केस घटकर 359 रह गए हैं। इनमें 157 मामले जयपुर जिले में बचे हैं। हालांकि बाड़मेर, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, जैसलमेर और झालावाड़ ऐसे जिले हैं, जहां फिलहाल एक भी एक्टिव केस मौजूद नहीं है।

- **राजधानी जयपुर में सर्वाधिक 15 नए मरीज मिले हैं।**
- **प्रदेश में 79 और संक्रमितों के ठीक होने के साथ ही एक्टिव केस घटकर 359 रह गए हैं।**

इधर राहत की बात यह है कि प्रदेश में सोमवार सहित पिछले पांच दिन से करोना संक्रमण से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। हालांकि अब तक इस बीमारी से 9551 लोगों की मृत्यु हो चुकी है।

'मामला केन्द्र का है'

जयपुर, 21 मार्च (वि.सं.)। सालासर बालाजी धाम के सुजानगढ़ में बने तोरण और रामदरबार की मूर्तियां ध्वस्त करने के मामले में आज विधानसभा अध्यक्ष सी.पी. जोशी ने कहा कि सड़क विस्तार का काम एनएचआई और इससे जुड़े ठेकेदार कर रहे हैं। इस तरह यह केंद्र सरकार से जुड़ा मामला है। सदन में इस विषय पर चर्चा नहीं होगी।

शून्यकाल में प्रतिपक्ष के उपनेता राजेंद्र राठौड़ और भाजपा विधायक अशोक लाहोटी ने स्थगन के जरिए यह मामला लगाया था, लेकिन स्पीकर ने इस विषय पर बोलने की अनुमति नहीं दी। ऐसे में राठौड़ ने आग्रह किया, तो विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि आप सदन के काफी सीनियर सदस्य हैं। यह मामला केन्द्र सरकार से जुड़ा हुआ है। इस पर चर्चा नहीं हो सकती।

जोशी ने कहा कि रामदरबार की मूर्तियां ध्वस्त करने की घटना दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन आपकी जो भी भावनाएं हैं, उनसे भारत सरकार को अवगत करा दिया जाएगा।

गौरतलब है कि भाजपा के प्रदेश से

- **सालासर बालाजी धाम के सुजानगढ़ में बने तोरण व राम दरबार की मूर्ति ध्वस्त करने के मामले को विधानसभा ने केन्द्र सरकार की एजेंसी एन.एच.आई. को जिम्मेवार ठहरा कर, इस विषय पर चर्चा को रोका।**

फ्री राशन

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 21 मार्च। ऐसी प्रबल संभावना है कि पिछले 20 माह से चल रही 5 किग्रा. खाद्यान्न मुफ्त देने की केन्द्रीय योजना अगले छः माह के लिये और बढ़ा दी जायेगी। कोविड महामारी के कारण शुरु की गई यह योजना 31 मार्च को समाप्त होने जा रही है।

एक भाजपा नेता ने कहा है कि इस योजना को जारी रखा जाना उन लोगों के लिये हमारा "रिटर्न गिफ्ट" होगा, जिन्होंने चार राज्यों के अभी हाल के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को वोट देकर वापस सत्ता में भेजा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने सार्वजनिक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **भाजपा के एक वरिष्ठ नेता के अनुसार यह "फ्री राशन" हमारी तरफ से रिटर्न गिफ्ट है, जनता के लिये, क्योंकि उसने पांचों राज्यों में भाजपा को जिताया।**

भाजपा सुनियोजित तरीके से देश को "कांग्रेस मुक्त" करने की रणनीति पर चल रही है

पर, कांग्रेस की वरिष्ठ, पुरानी पीढ़ी अपना स्थान छोड़कर परामर्श देने की भूमिका तक सीमित होने को तैयार नहीं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 21 मार्च। एक ऐसा प्रश्न, जो इस समय न केवल कांग्रेसजनों तथा उसके समर्थकों के सामने खड़ा है, बल्कि बहुत बड़ी संख्या में देश के जागरूक नागरिकों को भी उद्वेलित कर रहा है, यह है कि क्या देश की यह सबसे पुरानी पार्टी अब तक के सबसे भीषण एवं अस्तित्व के संकट पर पार पा लेगी, या फिर चुपचाप गुमनामी के अँधेरों में खो जायेगी।

यह बात शुरू में ही कह देना जरूरी है कि पार्टी की वर्तमान दुदर्शा के लिये कांग्रेस के सभी नेता, जिनमें गांधी परिवार भी शामिल है, सामूहिक रूप से जिम्मेदार हैं तथा पार्टी के पतन में हर नेता का योगदान रहा है।

अस्तित्व के इस संकट के पहले संकेत तो 2014 में ही नजर आ गये थे, जब राहुल गांधी के नेतृत्व में लडे गये लोकसभा चुनावों में पार्टी का उस समय तक का सबसे खराब प्रदर्शन किया था, और हर चुनाव के बाद यह स्थिति और अधिक संगीन होती गई। चुनावों में कांग्रेस सत्ता में आने में विफल रही है तथा इससे पार्टी के सामान्य कार्यकर्ताओं की अपेक्षा, इसके विस्थापित नेता कहीं ज्यादा निराश हुये हैं।

उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर और गोवा के अभी-अभी हुये विधान सभा चुनावों में हुई पार्टी की घोर पराजय के चलते, कई मुद्दे सामने आये हैं, जिनमें से कुछ मुद्दे जी-23, के उन वरिष्ठ किन्तु असंतुष्ट नेताओं ने भी उठाये थे तथा कुछ अन्य मुद्दे पार्टी के शीर्ष पर बैठे नेताओं ने उठाये है, जिनमें राहुल गांधी एवं प्रियंका गांधी भी शामिल हैं।

पार्टी के अधिकांश नेताओं, जो पहले पार्टी तथा पार्टी की सरकारों में महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं, को मीडिया में अपने विचार व्यक्त करना अच्छा लगता है लेकिन इसका उद्देश्य पार्टी को मदद करना नहीं होता, उनका उद्देश्य होता है-राजनैतिक ईकोसिस्टम में प्रासंगिक बने रहना, ताकि जब उनका बुरा वक्त आये, तब उनको अपने इन बयानों और टिप्पणियों को लाभ मिल सकें।

विचित्र बात यह है कि ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के किसी भी सत्र में आज तक इस बिन्दु पर न तो चर्चा हुई, न बहस हुई, न विश्लेषण हुआ और न इस मामले में कोई अध्ययन हुआ कि मतदाताओं के पार्टी के प्रति समर्थन में लगातार कभी क्यों आ रही है। पूर्णरूपेण आत्मनिरीक्षण करने के बजाय पार्टी अब तक केवल दोषारोपण करने में लगी हुई है।

इस घड़ी सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि पार्टी के नेतागण, आपसी मतभेद भूलाकर पार्टी को आरएसएस भाजपा की चुनौती का सामना करने के लिये तैयार करें, जो आजादी की लड़ाई से वसीयत में मिले "भारत के विचार" को ध्वस्त करने के लिये कमर कसे बैठे हैं। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। हो यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **नये खून, नये जोश को उभरने दिये बगैर, पार्टी कुम्हला कर मिट जाने को क्यों तत्पर है?**
- **जिन नेताओं ने नेहरू-गांधी की विरासत की सीढ़ी पर चढ़ कर दशकों तक पद, प्रभाव व धन पाया है, अभी भी सुखद एयर कंडीशन वातावरण में बैठकर, अपने पद व प्रभाव को ही सुरक्षित रखने पर चिंतन व चिंता कर रहे हैं। वे जनता के बीच जाने को मानसिक रूप से तैयार नहीं और जो युवा जनता के बीच रहकर राजनीति करना चाहते हैं, उन्हें मौका नहीं देना चाहते।**
- **सोच यहीं तक सीमित है कि, आपसी एडजस्टमैंट से कोई नई व्यवस्था निकल कर आये तो, वो अपनी प्रासंगिकता (रैलवैन्स) बरकरार रख सकें तथा अपनी अहमियत और बढ़ा लें।**